गीता सार

१. क्यों व्यर्थ चिन्ता करते हो? किससे व्यर्थ डरते हो? कौन तुम्हें मार सकता है? आत्मा न पैदा होती है, न मरती है.

२. जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा हो रहा है. जो होगा, वह भी अच्छा ही होगा. तुम भूत का पश्चाताप न करो. भविष्य की चिन्ता न करो. शिर्फ वर्तमान ही चल रहा है. अपना कर्तव्य करते रहो.

३. तुम्हारा क्या गया जो तुम रोते हो? तुम क्या लाये थे जो तुमने खो दिया? तुमने क्या पैदा किया था जो नाश हो गया? तुम कुछ लेकर न आए, जो लिया यहीं समाज से लिया. जो दिया उसी को दिया. खाली हाथ आए, खाली हाथ ही जाओगे. जो आज तुम्हारा है, कल किसी और का था, परसों किसी और का होगा. तुम इसे अपना मान कर मग्न हो रहे हो. बस, यह मोह ही तुम्हारे दुखों का कारण है.

४. परिवर्तन संसार का नियम है. जिसे तुम मृत्यु समझते हो, वही तो नया जीवन देती है. जब मेरा-तेरा, अपना-पराया, छोटा-बडा, मन से हटा दोगे, फिर सब तुम्हारा होगा और तुम सबके होगे.

५. न यह शरीर तुम्हारा है, न तुम इस शरीर के हो. यह शरीर पंच तत्त्वपृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश, और वायुसे बना है, और इसी मे मिल जायगा. तुम आत्मा हो, जिसका कभी नाश नही होता.

६. तुम अपने आपको भगवान के अर्पित कर दो. यही सबसे उत्तम सहारा है. जो इस सहारे को जानता है, वह भय, चिन्ता, शोक आदी से सदा के लिये मुक्त हो जाता है. जो कुछ भी तु करता है, उसे मन से भगवान को अर्पण करता चल, ऐसा करने से तु सदा जीवन-मुक्त का आनन्द अनुभव करेगा.

– भगवान श्रीकृष्ण